चार किताबों पर दो-चार बात

प्रभात

समीक्षा के लिए चुनी चार किताबों में से एक किताब 'इकतारा बोले' तक्षशिला पब्लिकेशन्स से है। दो किताबें 'बकरी के साथ' और 'मिट्टी की गाड़ी' तक्षशिला की ही एक नई संस्था 'इकतारा' के जुगनू प्रकाशन से है। एक और किताब 'किमिया' एकलव्य प्रकाशन से है। एकलव्य बच्चों के लिए प्रकाशन के क्षेत्र में काम कर रही पुरानी और प्रतिष्ठित संस्था है। जिसकी खास बात रही है कम कीमत पर बच्चों के लिए स्तरीय किताबें बनाना और देश के दूर-दराज इलाकों तक पहुंचाना। बाल साहित्य के क्षेत्र में तक्षशिला का काम नया है और सच में नया है। तक्षशिला के सहयोग से निर्मित हुई संस्था इकतारा बाल साहित्य के क्षेत्र में कुछ अद्भुत काम कर रही है जिनमें तीन काम प्रमुख है- बाल साहित्य में सृजन के लिए फेलोशिप देना, छोटे बच्चों के लिए 'प्लूटो' नाम की हिन्दी में एक कमाल की पत्रिका को हर दो महीने में प्रकाशित करना और जुगनू प्रकाशन के तहत बाल साहित्य की हर दृष्टि से सुरुचिपूर्ण किताबों का प्रकाशन करना। किताबों के साथ-साथ लगभग सौ पोस्टर और लगभग इतने ही कविता कार्ड भी प्रकाशित किए हैं।

बकरी के साथ

श्याम सुशील की लिखी और भार्गव कुलकर्णी के चित्रों से सजी यह साढ़े सात गुणा साढ़े सात इंच के आकार की एक छोटी चौकोर किताब है। अच्छे भार वाले मैपलिथो कागज पर इसे छापा गया है और प्रिंटिंग क्वालिटी एकदम बढ़िया है। प्रिंटिंग की क्वालिटी का इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि इलस्ट्रेटर ने घास के मैदान में चार से अधिक तरह के हरे रंग उकेरे हैं तो वे छपाई में दिख रहे हैं। पाठ्यपुस्तकों की तरह हरे के तरह-तरह के शेड्स को प्रस्तुत कर सकने वाली स्याही को बीच में ही लोग खा-पी नहीं गए हैं। आठ प्लस चार पेज की इस किताब के सभी चित्र डबल स्प्रैड में बने हैं जिनमें मुन्नी अपनी प्यारी बकरी के साथ घुटनों के बल बैठी खेल रही है, बात कर रही है, लेट रही है। कुल जमा आठ पंक्तियों का टेक्स्ट पूरी किताब में है। दो पेज के लिए दो नन्हीं-नन्हीं पंक्ति। बच्चे अक्षरों को पढ़ना जानें तो ठीक न जानें तो भी ठीक। इस पिक्चर बुक का आनंद उठाने में उन्हें अक्षरों की पहचान होने न होने से कोई बहुत फर्क पड़ने वाला नहीं है। चित्र तो सुंदर हैं ही, ले-आउट डिजाइन में भी कोई कमी नहीं है। चित्र और टेक्स्ट एक दूसरे के पूरक होकर इस किताब को बनाते हैं इसी अर्थ में यह एक पिक्चर बुक है।

मिट्टी की गाड़ी

किताब के इनर कवर पर लिखी पंक्ति जानने योग्य है कि 'तक्षशिला बाल साहित्य सृजन पीठ पर रहते हुए ये कहानियां लिखी गईं।' हिन्दी के प्रतिष्ठित कहानीकार प्रियंवद ने इस किताब के लिए छह कहानियां लिखी हैं। अपनी कढ़ाई-बुनाई में बच्चों के लिए लिखी ये कहानियां हिन्दी के बाल साहित्य में एक अपनी तरह का बड़ा योगदान है।

'झील इसलिए सूख गई' कहानी में भरतपुर के विश्व प्रसिद्ध घना पक्षी अभयारण्य में झील में कम पानी और नहीं के बराबर पक्षियों को देखकर विचलित निराश एक भारतीय पर्यटक उस बूढ़े कृषकाय व्यक्ति को खोज लेता है जिसे इस पर्यावरणीय दुर्घटना के कुछ साक्ष्य पता हैं। वह बताता है -''यह झील इसलिए सूख गई है क्योंकि इसमें पानी से ज्यादा लाखों, मासूम निरीह पक्षियों का खून गिरा है...।'' वह गहरे विशाद के साथ बताता है- ''दुख की बात है कि बहुत से अंग्रेज वाइसरॉय और रियासतों के राजाओं ने, दूसरे देशों के बड़े लोगों ने भी, यहां हर साल हजारों पक्षियों को मारा है।'' पर्यावरण के इस संकट को मानव जाति के भी संकट से जोड़कर देखते हुए कहानीकार कहानी के किरदार राजू के एक संवाद के जरिए कहता है कि ''जहां मासूम बेगुनाहों का खून गिरता है, वहां सब सूख जाता है जैसे यह झील। आज भी यह खून गिर रहा है। एक दिन यह धरती भी सूख जाएगी।''

'मिट्टी की गाड़ी' कहानी में एक डॉक्टर अपनी शहरी जिन्दगी को त्यागकर दूर-दराज के आदिवासी इलाके में जाकर गरीब आदिवासियों के जीवन से खुद को जोड़ लेता है, वह वहीं उन्हीं के बीच रहकर उनके इलाज के लिए अपना जीवन अपना सब कुछ लगा देने का निर्णय लेता है।

'मुन्ना बुनाईवाले' इस संग्रह की सबसे अच्छी कहानी है। विषयवस्तु के नजरिए से एक बहुत मजबूत पत्थर इस कहानी की नींव में रखा गया है। वह मजबूत पत्थर कहानी में एक अनोखे घटानक्रम से निकला यह वाक्य है -'किसी हुनर का खत्म होना इंसानों की बहुत बड़ी हार है।' मुन्ना बुनाई वाले बेंत की कुर्सियां बुनने का एक ऐसा हुनर जानते हैं जिसकी लोगों को तो जरूरत है लेकिन उस हुनर को जानने वाले नहीं बचे हैं। मुन्ना बुनाई वाले अपने बेटे से इस हुनर को बचाने का अुनरोध करते हुए ऊपर लिखा वह वाक्य बोलते हैं। रुचि न होते हुए भी इस हुनर को बचाने के लिए उनका बेटा अपनी इच्छाओं का उत्सर्ग करते हुए इस काम को हमेशा-हमेशा के लिए अपना लेता है। कहानी को पढ़ते हुए यह महसूस होता है कि हुनर केवल काम को जान लेना भर और करने का निर्णय लेना भर नहीं है। काम के हुनर में उसे निष्ठा, लगन, ईमानदारी और संजीदगी से करना भी शामिल है।

मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए संघर्ष की पीली रोशनी में अपनी धीमी गति से बढ़ते हुए ये किरदार पाठक के मन को धीर-गंभीर करते हुए गहनता से सोचने के लिए विवश कर देते हैं।

कहानियों के ये प्लॉट एकदम नए हैं। सही मायने में हिन्दी भाषा में बच्चों के लिए अच्छी रचनाओं की सीमित दुनिया को विस्तार देने वाले हैं। खुशी की बात है कि आज हिन्दी के बड़े लेखक विनोद कुमार शुक्ल, अरगर वजाहत, प्रियंवद, नरेश सक्सेना, स्वयं प्रकाश, कृष्ण कुमार आदि प्रयास पूर्वक ऐसा सरल, सरस और मूल्यवान साहित्य रचने में जुटे हैं जिसे बच्चे आसानी से समझ सकें, ग्रहण कर सकें। इस मुहिम को हिन्दी पट्टी में जीवंत करने के लिए चकमक के पूर्व और प्लूटो के वर्तमान संपादक-द्वय सुशील शुक्ल और शशि सबलोक का श्रम एक ऐतिहासिक तथ्य होने जा रहा है।

इकतारा बोले

इकतारा बोले हिन्दी कथाकार प्रियंवद की लिखी कथेतर किताब है। इस किताब में प्रियंवद ने विश्व के दस महान यात्रियों की जिन्दगी और यात्राओं के बारे में लिखा है। उन चुने हुए दस यात्रियों के नाम जान लेना दिलचस्प रहेगा। वे हैं - फाहियान, श्वेनत्सांग, अलबरूनी, मार्को पोलो, इब्न बतूता, वास्को-दा-गामा, विलियम हॉकिन्स, ज्यांबैपटिस्ट टैवर्नियर, फ्रांस्वा बर्नियर, निकोलाओ मनूची। किताब की भूमिका में प्रियंवद ने लिखा है- 'यात्री वे लोग होते हैं जो अपना देश, परिवार, सुखी संपन्न जीवन छोड़कर हजारों मील दूर, अनजान देशों में वर्षों भटकते हैं। जिज्ञासा, उत्सुकता और कुछ नया जानने की तड़प के कारण कई बार भूखे प्यासे रहते हुए अपने जीवन को खतरों में भी डालते हैं। दुर्गम रास्तों से गुजरते हुए, अपरिचित, अनजान लोगों के बीच रहकर, गहरी दृष्टि से जीवन को नजदीक से देखते हैं।... ''इकतारा'' की तरह बिल्कुल अकेले, अपनी आत्मा की धुन में मग्न ये यात्री, मनुष्य के संकल्प, वीरता और साहस का अमर गान होते हैं।'

भूमिका की इन पंक्तियों के संदर्भ में किताब का यह अंश देखते हैं -'गोबी की भयानक यात्रा का वर्णन करते हुए फाहियान ने लिखा है, ''अनेक दुष्ट आत्माएं और गर्म हवाएं इसमें निवास करती थीं जो किसी को नहीं छोड़ती थीं। न ऊपर पक्षी दिखते थे न नीचे पशु। मार्ग को पहचानने के लिए चारों ओर निगाह दौड़ाने पर सिवाय मरे हुए आदमियों की जली हुई हड्डियों के और कुछ नहीं दिखता था।''

इन यात्रियों के जीवन के संक्षिप्त लेकिन बड़े ही सारगर्भित विवरण प्रियंवद ने इस किताब में दर्ज किए हैं। इतिहास के ज्ञान से समृद्ध सरल और रसपूर्ण भाषा में उन्होंने इन दस पाठों को तैयार किया है। पठनीयता का जबरदस्त गुण किताब की प्रत्येक पंक्ति में जादू की तरह समाया हुआ है। इन वृतांतों को पढ़ते हुए एक ओर घटनाएं रोमांचित करती है दूसरी ओर सोचने पर मजबूर करती हैं कि हजारों वर्षों के इतिहास में मनुष्य ने महानताओं की कैसी-कैसी ऊंचाइयों को छुआ है और कैसी-कैसी क्रूरताओं को भी अंजाम दिया है। जब फाहियान के विवरणों में बुद्ध के विचारों के प्रति चीन का अविश्वसनीय प्रेम देखते हैं तो रोमांच होता है, लेकिन जब इब्न बतूता के विवरणों में भारत में पतियों की मृत्यु पर स्त्रियों को जलाये जाने के लोमहर्षक दृष्य देखते हैं, (जिन दृष्यों का साक्षी रहते बतूता बेहोश होकर गिर गया था) तो शर्म, क्षोभ और शोक के मिले जुले भावों से दिल भर आता है।

प्रियंवद ने इन यात्रियों के विवरणों को आलोचानात्मक नजरिए से भी देखा है जैसे कि अलबरूनी के लिखे पर टिप्पणी करते हुए वे लिखते हैं कि 'वह पाणिनी, पतंजली, वराहमिहिर, ब्रह्मदत्त, आर्यभट्ट आदि को बहुत महत्व नहीं देता या अवैज्ञानिक ठहराता है। वास्तव में यह आधी-अधूरी पुस्तकों को पढ़ने और सुनी हुई बातों पर विश्वास करने का प्रभाव है।' अलबरूनी के काम की सीमाओं की पड़ताल करते हुए प्रियंवद कहते हैं कि 'अलबरूनी महमूद गजनवी के दरबार में था जिसने भारत पर 17 बार आक्रमण किए। ...अलबरूनी के लिए संभव नहीं था कि वह इस्लामी सभ्यता और संस्कृति, साहित्य व विज्ञान को बराबर की टक्कर देने वाली हिन्दू सभ्यता को कहीं भी किसी स्तर पर श्रेष्ठ कह सके।' अलबरूनी के इस अंतर्विरोध को पहचान लेने के बाद प्रियंवद के मन में इस यात्री के प्रति सम्मान में कोई कमी नहीं आती, वे इस पाठ का अंत इस पंक्ति के साथ करते हैं कि 'भारत आने वाले समस्त यात्रियों में अलबरूनी महानतम है।' यह इतिहास के प्रति प्रियंवद के भी वस्तुनिष्ठ नजरिए को प्रकट करने वाली बात है।

किताब में आए अनेक विवरण हमें मनुष्य जीवन के बारे में सोचने पर मजबूर करते हैं। रजिया सुल्तान जिसने चार साल शासन किया, एक लड़ाई के बाद वह थकान से चूर निढाल होकर एक खेत में बेहोश पड़ी थी। वहां एक व्यक्ति ने उसे मार दिया और लूट लिया। उसने हीरे-जवाहरात की वह पोटली लूट ली जो उसके कपड़ों में कहीं बंधी थी। रजिया ने हीरों की ये पोटली संकट काल में जीवन संघर्ष के लिए रखी होगी लेकिन संकट ऐसा आया कि वह उसके कुछ काम नहीं आई। उस व्यक्ति ने रजिया को खेत में गाड़ दिया और उसकी देह के वस्त्रों को बाजार में बेचते हुए पकड़ा गया। यहां हम सोचने पर मजबूर होते हैं कि देखिए मनुष्य कितना लालची और क्रूर हो सकता है कि हीरे जवाहरात की पोटली से उसके लालच की भूख नहीं मिटी उसने रजिया के कपड़े तक जा बेचे।

सत्ता के लिए कैसे औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को जेल में कैद करके रखा और अपने बड़े भाई दाराशिकोह पर धूल डालकर जुलूस निकाला और ले जाकर उसका कत्ल कर दिया। जब शाहजहां जेल में था तो उसका एक गुलाम शाहजहां से तुच्छ गुलामों जैसा व्यवहार करता था। प्रियंवद लिखते हैं 'ध्यान दें कि यह वही शाहजहां था जिसके पास कोहिनूर था, तखतेताऊस था और जिसने ताजमहल बनवाया था।'

इन यात्रियों के साथ-साथ जरूरत पड़ने पर प्रियंवद खुद अपने समय का इतिहास भी बताते चलते हैं- ''श्वेनत्सांग अफगानिस्तान से बामियान पहुंचा। उसने वहां बनी बुद्ध की दो अद्भुत विशाल मूर्तियों का वर्णन किया है। जिनकी ऊंचाई 170 और 115 फुट थी। कुछ वर्ष पहले ही अफगानिस्तान के तालिबानों ने इन दोनों मूर्तियों को तोप से नष्ट कर दिया। पूरी दुनिया ने उन्हें रोकने की कोशिशें की थीं। उन्हें धन देने का प्रस्ताव दिया था। जापान ने दोनों मूर्तियां सुरक्षित जापान ले जाने की अनुमति मांगी थी। पर कुछ भी नहीं हुआ। दुनिया ने बुद्ध को तोप से उड़ाए जाते हुए देखा था। दोनों मूर्तियां पूरी तरह नष्ट हो चुकी हैं।''

इस किताब को पढ़ते हुए एक बात लगातार महसूस होती रही कि काश हमें पाठ्यपुस्तकों में इतने रोचक तरीके से लिखा हुआ इतिहास पढ़ने को मिला होता तो कितना अच्छा रहता। हम इतिहास में स्कूली दिनों से ही रुचि लेने लगते। आज भी बच्चों की इतिहास की पाठ्यपुस्तकें देखता हूं तो उनकी उबाऊ और बेसिरपैर की भाषा पढ़ी नहीं जाती है। घटिया कागज, घटिया छपाई को देखकर उन किताबों से अरुचि होती है।

इस किताब की सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। पुरानी पांडुलिपियों के पन्नों, ऐतिहासिक दस्तावेजों से प्राप्त किए नक्शों, चित्रों और इलस्ट्रेशन के जरिए किताब को रोचक बनाने में इस किताब के संपादकों शशि सबलोक और सुशील शुक्ल ने कोई कमी नहीं छोड़ी है।

पुस्तक : किमिया
लेखक : हदिस लज़र ग़ोलामी
प्रकाशकः एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
मूल्य : 48 रुपये

किमिया

एकलव्य ने 'सात समंदर पार से' नामक किताबों की एक शृंखला प्रकाशित की है जिसमें नीले लोग, जल्द बहुत जल्द जैसी मर्मस्पर्शी कहानियां हैं। उसी शृंखला की एक कहानी है किमिया। कहानी तो कमाल है ही, इसके चित्रों में एक अलग ही नयापन, अनोखापन है। चित्र धूप के पानी से अभी-अभी नहाकर निकले से लगते हैं। रंगों का ऐसा उजला प्रयोग जिसमें से जीवन की रोशनी फूटती हो। चित्रों में जीवंत रोशनी इसलिए और भी आकर्षक हो उठती है कि कहानी मृत्यु पर है- 'सब नींद में थे जब किमिया मरी, खुद किमिया भी।' असल में इस कहानी में अपने ही सपने में किमिया मर जाती है। तो सपनों में हम जो दृष्य और रंग देखते हैं। और जागने पर न पकड़ में आने वाली जिस गति में देखते हैं उसे चित्रों में ला सकना कैसा काम होगा? उसी काम को इस कहानी के चित्रकार ने संभव किया है। चीजें कैसे गड्ड-मड्ड और उलझी हुई लेकिन सपने की तरह सुंदर भी। यही बात इन चित्रों में देखी जा सकती है। हदिस लज़र गोलामी की लिखी इस पर्सियन कहानी के चित्र मेहरनूश मायूमियां ने बनाए हैं। ◆

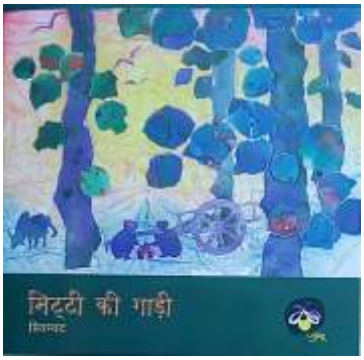

पुस्तक : मिट्टी की गाड़ी
प्रकाशन : जुगनू प्रकाशन, दिल्ली
लेखक : प्रियम्वद
मूल्य : 120 रुपये

पुस्तक : बकरी के साथ
प्रकाशन : जुगनू प्रकाशन, दिल्ली
लेखक : श्याम सुशील
मूल्य : 120 रुपये

पुस्तक : इकतारा बोले
प्रकाशन : तक्षशिला पब्लिकेशन, दिल्ली
लेखक : प्रियम्वद
मूल्य : 150 रुपये

लेखक परिचय : राजस्थान के जाने-माने युवा कवि हैं। एकलव्य, भोपाल; रूम टू रीड, इण्डिया एवं अन्य प्रकाशनों से बच्चों के लिए कविता एवं कहानियों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं।

संपर्क : 9460113007; prabhaaat@gmail.com